SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-02, Issue-02, December- 2024
www.shikshasamvad.com

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा का भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ एकीकरण

सालिम अली
असिस्टेंट प्रोफेसर
श्री गोविंद महाविद्यालय तेवरखास
बिलारी मुरादाबाद
ईमेल:salim15031988@gmail.com

सारांश:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ समेकन का उद्देश्य पारंपरिक भारतीय शिक्षाशास्त्र, जीवनमूल्य एवं सांस्कृतिक धरोहर को आधुनिक शिक्षाव्यवस्था के अभिन्न अंग के रूप में स्थापित करना है। इस नीति ने भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्राचीन परंपराओं, विचारधाराओं एवं शिक्षण पद्धतियों को शिक्षा के सम्पूर्ण आधारभूत तंत्र में समाविष्ट किया है। यह परंपरा न केवल भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है, बल्कि विश्व के ज्ञानवृत्त में भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। इसके तहत, वेद, उपनिषद्, उपाख्यान, पुराण, योग, आयुर्वेद आदि से प्राप्त ज्ञान, जीवन-दर्शन और नैतिक मूल्यों को नई पीढ़ी को सीखाने का प्रयास किया गया है। नीति ने इस प्राचीन ज्ञान को उनके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ के साथ पुनः परिभाषित कर, एक समावेशी और परस्पर सम्मिलित शिक्षण मॉडल स्थापित करने का प्रावधान किया है।

यह एकीकरण शिक्षण, पाठ्यक्रम डिज़ाइन, मूल्यांकन पद्धतियों और अनुसंधान के विविध पहलुओं में स्पष्ट दृष्टिकोण देता है। भारतीय ज्ञान की समागम से, विद्यार्थियों में सांस्कृतिक चेतना, जीवन मूल्यों, और समकालीन समस्याओं के समाधान हेतु रचनात्मक दृष्टिकोण का विकास संभव होता है। साथ ही, इस एकीकरण का उद्देश्य विद्यार्थियों को राष्ट्रीय और वैश्विक दोनों स्तर पर अपनी सांस्कृतिक विरासत का गर्व और आत्म-सम्मान महसूस कराना है। शिक्षा के भारतीय परंपरा का समावेश, समकालीन विज्ञान, तकनीक और विश्वव्यापी ज्ञान के साथ मेलजोल स्थापित करता है, जिससे छात्रों में समावेशी पथिका एवं बहु-विद्या आधारित शिक्षण का अधिक प्रभावी और सार्थक इरादा विकसित हो सके। इस प्रकार, भारतीय ज्ञान परंपरा का तालमेल, आधुनिक शिक्षा के संदर्भ में एक सशक्त, समर्पित और विकसित शिक्षण प्रणाली के निर्माण में सहायक है।

मुख्य शब्द: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय ज्ञान परंपरा, शिक्षण प्रणाली, अदि।

1. प्रस्तावना

प्रस्तावना में भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्व को रेखांकित करते हुए यह था कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में उसकी उपेक्षा आवश्यक नहीं है। भारतीय शिक्षा परंपरा न केवल प्राचीन काल से समृद्ध रही है, बल्कि उसमें जीवन के समग्र विकास, नैतिक मूल्यों और तार्किक सोच का समावेश भी समाहित है। यह परंपरा विश्व के ज्ञान के साथ अपना विशिष्ट स्थान रखती है, जिसमें वेद, उपनिषद, गीता, योग और आयुर्वेद जैसे प्राचीन ग्रंथ शामिल हैं। इन ग्रंथों में मानव शरीर, मन, आत्मा, नैतिकता और पर्यावरण के प्राचीन लेकिन समयसिद्ध ज्ञान का समावेश है, जो आज के शैक्षिक संदर्भ में भी प्रासंगिक हैं।

यह आवश्यक है कि शिक्षा को भारतीय परंपरा के मूल सार को मान्यता देते हुए नई ऊर्जा और आधुनिकता के साथ पुनः स्थापित किया जाए। इससे न केवल छात्र अपनी सांस्कृतिक विरासत से जुड़ेंगे, बल्कि वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भी सशक्त बनेंगे। भारतीय ज्ञान परंपरा की विशिष्टता इसकी बहुमुखी अभिव्यक्ति, समावेशी दृष्टिकोण और जीवन के साथ सूक्ष्म संबंध बनाने की क्षमता में निहित है। इस परंपरा का शिक्षण भाव, नैतिक शिक्षा और व्यवहारिकता पर विशेष ध्यान केंद्रित करता है, जो व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास हेतु अनिवार्य है।

प्रस्तावना में यह भी उद्देश्य स्पष्ट किया गया है कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा का सक्रिय समावेशन शिक्षण की विधियों, पाठ्यक्रम, मूल्यांकन और शिक्षकों के प्रशिक्षण में नई दिशा प्रदान करेगा। इससे परंपरा का वस्तु-संबंधी अध्ययन, समर्पित अनुसंधान एवं समकालीन संदर्भों के अनुरूप उसकी प्रासंगिकता सुनिश्चित होगी। इस प्रक्रिया में प्राचीन ग्रंथों का वैज्ञानिक विश्लेषण, विचारधारात्मक समावेशन और नवीन पुनर्कल्पना आवश्यक है, ताकि भारतीय ज्ञान का समावेश शिक्षा के आधुनिकीकरण एवं वैश्वीकरण के साथ सामंजस्य स्थापित कर सके।

अतः प्रस्तावना का यह उपदेश भारतीय शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा के समुचित स्थान एवं उसकी प्रासंगिकता को रेखांकित करता है, जिससे दीर्घकालीन सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यक्तित्व विकास संभव हो सके। नई नीति का यह मार्ग भारतीय विरासत को आधुनिक शिक्षा के साथ सशक्त रूप से जोड़ने का एक प्रयत्न है, जो समावेशी और परिष्कृत शिक्षा व्यवस्था की नींव रखेगा।

2. नीतिगत संदर्भ और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश का विचार एक दीर्घकालिक एवं रणनीतिक प्रक्रिया है, जिसने भारतीय सांस्कृतिक विरासत एवं शिक्षण परंपराओं के समावेश को मुख्य उद्देश्य माना है। ऐतिहासिक रूप से, भारतीय शिक्षा प्रणाली विविध ज्ञान आचार्यों, गुरुकुल प्रणाली और वेद, उपनिषद्, और योग जैसी प्राचीन परंपराओं से प्रेरित रही है, जिनमें जीवन के अंतिम उद्देश्य, नैतिक मूल्यों और समग्र विकास पर जोर दिया गया है।

स्वतंत्रता के बाद, भारतीय शिक्षण व्यवस्था में परंपरागत ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास हुआ, परंतु व्यापक भूमिका पाने में यह संघर्ष के दौर से गुजरा। आधुनिक शैक्षिक ढांचे ने पश्चिमी ज्ञान प्रणालियों और वैज्ञानिक प्रविधियों को प्रमुखता दी, जिससे पारंपरिक भारतीय ज्ञान का स्थान सीमित हो गया। 21वीं सदी में, वैश्विक परिप्रेक्ष्य और स्थानीय सांस्कृतिक पहचान की पुनः स्थापना के प्रयासों के कारण भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा के मुख्यधारा में पुनः स्थान दिलाने का आंदोलन शुरू हुआ।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

इस प्रभावशाली आंदोलन के पीछे मुख्य तर्क यह रहा कि भारतीय सांस्कृतिक ज्ञान प्रणाली न केवल दार्शनिक और ऐतिहासिक दृष्टि से मूल्यवान है, बल्कि इसमें वृहद्-आयामिक शिक्षा के अभिविन्यास, नैतिकता और जीवन कौशल के भी समावेश है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इस दिशा में कदम बढ़ाते हुए भारतीय ज्ञान प्रणालियों को पाठ्यक्रम में शामिल करने, शिक्षण विधियों का पुनः आकलन, और छात्रों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का संकल्प व्यक्त किया है।

ऐतिहासिक रूप से, यह प्रयास भारतीय परंपरा के ज्ञान के संरक्षण, सम्मान और पुनर्स्थापना का आधार बनाता है, ताकि देश की युवा पीढ़ी अपने सांस्कृतिक मूल्यों का समुचित ज्ञान प्राप्त कर वैज्ञानिक ज्ञान के साथ समन्वय स्थापित कर सके। इससे न केवल शिक्षा का विविधता और सम्मिश्रण बढ़ेगा, बल्कि शिक्षार्थियों में राष्ट्रीयता, नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना भी विकसित होगी। परिणामस्वरूप, यह नीति भारतीय ज्ञान परंपरा के उत्तराधिकार को आधुनिक शिक्षा प्रणाली के साथ समन्वयित कर स्थायी एवं समावेशी शिक्षण का आधार स्थापित करने का महत्वाकांक्षी प्रयास है।

3. भारतीय ज्ञान परंपरा: परिकल्पना और कार्यान्वयन का संदर्भ

भारतीय ज्ञान परंपरा का परिकल्पनात्मक आधार उसकी विविधता, समर्पण और एकीकृत दृष्टिकोण में निहित है। यह परंपरा विभिन्न संस्कृतियों, विचार धाराओं और शिक्षाशास्त्रों का सम्मिश्रण है, जो वैश्विक मानवीय मूल्य और स्वदेशी अनुभूतियों का संगम प्रस्तुत करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इस परंपरा को नई शिक्षा प्रणाली में समेकित करने के लिए एक सशक्त रणनीति विकसित की है। इसकी कार्यान्वयन प्रक्रिया में अध्ययन के विषयवस्तु, शिक्षण विधि, मूल्यांकन प्रणाली एवं शिक्षक प्रशिक्षण में भारतीय ज्ञान का समावेश आवश्यक है। परंपरा की प्रासंगिकता को समझते हुए, नीति ने भारतीय दर्शन, योग, आयुर्वेद, भारतीय कला और सांस्कृतिक मूल्यों को पाठ्यक्रम का आधार बनाने पर बल दिया है। इन तत्वों का समावेश शैक्षिक सुसंस्कृत को बढ़ावा देता है और छात्रों के समग्र विकास का मार्ग प्रशस्त करता है।

कार्यक्रम का क्रियान्वयन विभिन्न स्तरों पर सुनिश्चित किया गया है, जिसमें सीखने के केंद्र, शिक्षकों की क्षमता विकास एवं संसाधनों का संवहन शामिल है। इसमें पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के बीच समन्वय स्थापित करने हेतु विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं पाठ्यक्रम संशोधन किए गए हैं। यह प्रयास भारतीय ज्ञान परंपरा के ऐतिहासिक संदर्भ और वर्तमान आवश्यकता के बीच स्थायी संबंध बनाता है, जिससे शिक्षा स्वदेशी मूल्यों से प्रेरित होकर वैश्विक मानकों का अनुपालन कर सके। अतः, भारतीय ज्ञान परंपरा का शैक्षिक संरचना में समावेश न केवल शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ावा देता है, बल्कि भारतीय संस्कृति और परंपरा की सशक्त धारणा को भी मजबूत बनाता है।

4. एनईपी 2020 के प्रमुख सिद्धांत और शिक्षा के भारतीय ज्ञान के साथ संगति

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा मूलतः भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ सुसंगत एवं समरस करने का प्रयास किया गया है। इस नीति का मानना है कि भारतीय सनातन शैक्षणिक धरोहर एवं आधुनिक ज्ञान प्रणालियों के बीच समांतरता और संवाद स्थापित करना आवश्यक है, ताकि छात्रों के समग्र विकास में योगदान हो सके। इसमें भारतीय दर्शन, योग, आयुर्वेद, विज्ञान और कला जैसे क्षेत्रों का मर्मज्ञ समावेश अपेक्षित है, जो न केवल शिक्षा के मूल्यों की पुष्टि करता है, बल्कि उनमें नवीनता और प्रासंगिकता भी लाता है। एनईपी 2020 का उद्देश्य भारतीय ज्ञान के प्रति संपूर्ण जागरूकता उत्पन्न करना है, जिससे भारतीय सांस्कृतिक विरासत एवं मूल्यवान परंपराओं का संरक्षण एवं संवर्धन हो सके। इसमें पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों को आधुनिक तकनीकों एवं शिक्षण विधियों के साथ मिलाकर नई शैक्षणिक मानक स्थापित करने का संकल्प है। यह नीति शिक्षण में भारतीय साहित्य, सांस्कृतिक संदर्भ, और लोककथाओं को भी पाठ्यक्रम में शामिल करने पर बल देती है, ताकि छात्र अपने मूल देशज संदर्भों के प्रति जागरूक एवं सम्मानित महसूस कर सकें। साथ ही, भारतीय ज्ञान प्रणालियों की वैज्ञानिकता एवं रहस्यों को आधुनिक

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जोड़ कर शिक्षा की विविधता और बहुलताके प्रति सम्मान को बढ़ावा देने का प्रयास किया गया है। इससे न केवल छात्रों का सांस्कृतिक आत्म-सम्मान जागृत होता है, बल्कि उनके समझने और नई पीढ़ी के निर्माण में भी वृद्धि होती है। इस प्रकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा के भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ शिक्षण की समरसता और समावेशिता को सुनिश्चित करते हुए, शिक्षण प्रणाली को गहराई एवं वैज्ञानिकता प्रदान करने का एक सशक्त प्रयास है।

5. पाठ्यक्रम संरचना और अध्ययन के उद्देश्य

पाठ्यक्रम संरचना और अध्ययन के उद्देश्य में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश न केवल शिक्षण सामग्री का विस्तार है, बल्कि इससे छात्रों के शैक्षिक दृष्टिकोण में भी व्यापक परिवर्तन का संकेत मिलتا है। यह संरचना भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन व विज्ञान से संबंधित ज्ञानवर्धक विषयों को पाठ्यक्रम में केंद्रित रूप से सम्मिलित करती है, ताकि विद्यार्थियों का भारतीय पारंपरिक ज्ञान से जुड़े दृष्टिकोण का विकास हो सके। इस रणनीति का उद्देश्य शिक्षण को अधिक प्रासंगिक, जीवंत और सांस्कृतिक रूप से समावेशी बनाना है। यह नई पाठ्यक्रम संरचना प्राचीन भारतीय ग्रंथों, कहानियों, तथा परंपरागत विधियों का अध्ययन शामिल करने के साथ ही आधुनिक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण को भी महत्व देती है। इससे विद्यार्थियों में भारतीय ज्ञान प्रणालियों का गहरा अवबोध और प्रासंगिकता स्थापित होती है। अध्ययन के उद्देश्य में आत्मिक जागरूकता, वैचारिक स्वतंत्रता, समावेशिता एवं मूल्यों का सृजन भी शामिल है। इन सभी तत्वों का उद्देश्य युवाओं में भारतीय राष्ट्रीयता की भावना उन्नत करना और उनकी समग्र व्यक्तिगत व सामाजिक विकास में सहायता करना है।

इसके अतिरिक्त, इस संरचना का लक्ष्य शिक्षण विधियों में आयाम प्रदान करना है ताकि उत्तरदायी एवं समावेशी शिक्षा का मार्ग प्रशस्त हो सके। भारतीय ज्ञान परंपरा की शिक्षाओं को विद्यार्थियों तक प्रभावी ढंग से पहुँचाने के लिए शिक्षकों का प्रशिक्षण जरूरी है, जिससे वे प्राचीन ग्रंथों और परंपरागत शिक्षण विधियों का आधुनिक संदर्भ में प्रयोग कर सकें। इस प्रकार के अध्ययन से शिक्षा प्रणाली में परंपरा और नवीनता का समागम संभव होता है, जो कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक महत्वपूर्ण अंग है। इस सम्मिलित दृष्टिकोण से छात्रों में वैज्ञानिक सोच विकास के साथ-साथ भारतीय संस्कृति और मूल्यों का भी समुचित आचारण स्थापित होता है।

6. शिक्षण-शास्त्र और मूल्यांकन में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रविष्टियाँ

"शिक्षण-शास्त्र और मूल्यांकन में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रविष्टियों" का समुचित समावेशन वर्तमान प्रणाली के परस्पर संबंधों को मजबूत करने का प्रयास है, जिससे भारतीय सांस्कृतिक और दार्शनिक मूल्यों का शिक्षण प्रक्रिया में गहरा समावेश सुनिश्चित हो सके। इस पहल के अंतर्गत, सीखने और मूल्यांकन के मानकों को भारतीय शिक्षा परंपरा की विशिष्टताओं के अनुरूप पुनर्संयोजित किया गया है। पारंपरिक शिक्षण विधियों जैसे गुरुकुल प्रणाली, प्रशिक्षण के माध्यम से संवादात्मक और भावनात्मक शिक्षा को पुनः जीवंत किया गया है, जो विद्यार्थियों में सकारात्मक मूल्य, करुणा और समाज की सेवा का संकल्प विकसित करने में सहायक हैं। साथ ही, भारतीय योग, ध्यान, और ध्यान केंद्रित प्रक्रियाएं शिक्षण के स्नायुविज्ञान और मानसिक स्वास्थ्य पर आधारित मूल्यांकन उपायों में लागू की गई हैं। इसका उद्देश्य शिक्षण के प्रति छात्रों की अंतःप्रवृत्ति और हृदयकरण को प्रोत्साहित करना है, जिससे सीखने की प्रक्रिया सिर्फ ज्ञानार्जन ही नहीं, बल्कि जीवन के व्यापक संस्कार भी बन सकें। मूल्यांकन के संदर्भ में, पारंपरिक कला, संगीत, और काव्य का समावेश कर दांपत्य और सौंदर्यबोध को बढ़ावा दिया गया है। योग्यता डेटाबेस और मूल्यांकन मानकों में भारतीय शिक्षा-दर्शन जैसे योग, न्याय एवं तत्वमीमांसा का समावेश इन विधियों को गहन आत्मिक एवं नैतिक आधार प्रदान करता है। इन प्रविष्टियों का लक्ष्य शिक्षार्थियों में आत्म-आलोचना, सम्यक विचार तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास है। इससे शिक्षण और मूल्यांकन प्रक्रियाएँ अधिक समावेशी, हाशिये पर पड़े समूहों के लिए अधिक सुलभ और उनके सांस्कृतिक मूल्यों के

अनुरूप बन सकेंगी। इस प्रकार, भारतीय ज्ञान परंपरा का शिक्षण-शास्त्र एवं मूल्यांकन में समावेश केवल शैक्षिक उद्देश्यों का ही नहीं, बल्कि एक समग्र व्यक्तित्व का विकास सुनिश्चित करने का उपाय है, जो राष्ट्र की सांस्कृतिक समरसता एवं वैचारिक शक्ति को मजबूत करता है।

7. बहु-विद्या, बहु-भाषा और समावेशी शिक्षा

बहु-विद्या, बहु-भाषा और समावेशी शिक्षा का उद्देश्य भारतीय शिक्षण प्रणाली में विविधता, संस्कृतिक समरसता और समग्रता को स्थापित करना है। इसके अंतर्गत, विद्यार्थियों को न केवल विभिन्न शास्त्रों, विद्याओं और भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया जाता है, बल्कि उनके समावेशी और समान विकास के लिए भी प्रयास किए जाते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा का यह समावेश शिक्षण को केवल पारंपरिक ज्ञान तक सीमित नहीं रखता, बल्कि आधुनिक शिक्षा व्याकरण के साथ संतुलित समीकरण स्थापित करता है। विविध भाषाई माहौल में अध्ययन करने की सुविधा विद्यार्थियों की संप्रेषण क्षमता, सांस्कृतिक जागरूकता और समावेशिता को बढ़ावा देती है। इससे पारंपरिक और नवीन शिक्षण पद्धतियों के बीच समरसता भी बनती है, जिससे वंचित और उपेक्षित समूहों को भी समान अवसर प्राप्त होते हैं। इसके अतिरिक्त, बहु-विद्या और बहु-भाषा का समावेशन मानसिक लचीलापन, रचनात्मकता और अध्ययन में नवीनता का स्रोत बनता है। समावेशी शिक्षा का लक्ष्य प्रत्येक छात्र की अनूठी आवश्यकताओं और पृष्ठभूमि का सम्मान करते हुए उसके समग्र विकास में सहायक है। यह समझना आवश्यक है कि शिक्षण सामग्री, शिक्षक प्रशिक्षण और संसाधनों की समुचित व्यवस्था से ही इन प्रयासों का वास्तविक फल प्राप्त हो सकता है। कुल मिलाकर, यह दृष्टिकोण शिक्षा को अधिक सहभागी, विविधता पूर्ण और भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ सुसंबद्ध बनाने का सुनिश्चित माध्यम है, जिससे स्थायी और समग्र समाज का निर्माण संभव हो सके।

8. शिक्षण-अनुसंधान और संस्थागत विविधता

अध्ययन और अन्वेषण का प्रवृत्ति विविधता एवं संस्थागत विविधता से गहरा संबंध रखती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य न केवल मानकीकृत शिक्षण पद्धतियों को स्थापित करना है, बल्कि विद्यार्थियों की विविध पृष्ठभूमियों और क्षमताओं का समुचित उपयोग सुनिश्चित करना भी है। इस दिशा में, विभिन्न शिक्षण संस्थानों में स्वतंत्रता एवं अनुकूलन की सुविधा प्रदान कर उनके विशिष्ट सांस्कृतिक एवं शैक्षिक धरोहर के अनुरूप अकादमिक माहौल का विकास किया गया है। भारतीय ज्ञान परंपरा को पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों एवं मूल्यांकन प्रक्रियाओं में समेकित कर इस विविधता को उनके मूल रूप में बरकरार रखा गया है। संस्थानों को ईमानदारी से भारतीय पारंपरिक ज्ञान, स्थानीय भाषाओं, और क्षेत्रीय संदर्भों का समावेश करने के अवसर प्रदान किए गए हैं, जिससे शिक्षण का संदर्भ अधिक सजीव एवं प्रासंगिक बनता है। इसके अतिरिक्त, बहु-विद्या और बहु-भाषा प्रणाली का प्रावधान छात्र की संपूर्ण विकास में सहायक है, जो विभिन्न संस्कृतियों और ज्ञान श्रृंखलाओं के बीच संवाद और समाक्षमता को बढ़ावा देता है। इस समावेशन को प्रभावी बनाने के लिए, शिक्षकों का प्रशिक्षण और संसाधनों का संचार अनिवार्य हैं, ताकि भारतीय ज्ञान परंपरा की गहराई एवं विविधता को पाठ्यक्रम एवं शिक्षण प्रक्रिया में प्रभावी ढंग से शामिल किया जा सके। अंततः, शिक्षण-अनुसंधान के स्वच्छंद एवं विविध मॉडल का समर्थन अवश्यक है, जो न केवल स्थानीय एवं क्षेत्रीय दृष्टिकोणों को महत्व देता है, बल्कि वैश्विक संदर्भों के साथ भी सामंजस्य स्थापित करता है। इस प्रकार, संस्थागत विविधता भारत की बहु-धार्मिक, बहु-सांस्कृतिक विविधता का प्रतिनिधित्व करते हुए, शिक्षण प्रक्रिया को समावेशी, प्रज्वलित एवं जीवनमूल्य आधारित बनाती है।

9. क्रिटिकल सिस्टम: मानकीकरण बनाम स्थानीय ज्ञान

क्रिटिकल सिस्टम के अंतर्गत, मानकीकरण और स्थानीय ज्ञान के बीच स्थायी टकराव और समन्वय का विषय प्रमुख होता है। परंपरागत शिक्षा प्रणालियाँ सामान्यतः मानकीकृत शैक्षिक मानदंडों पर केंद्रित रहती हैं, जिनमें एकरूपता और तुलनीयता को प्राथमिकता दी जाती है। इस प्रणाली

में सूचनाओं का एक सार्वभौमिक ढाँचा बनाना आसान होता है और शिक्षण वस्तुओं का प्रसार आसानी से किया जा सकता है। वहीं, भारतीय ज्ञान परंपरा का आधार मौलिक और स्थानिक ज्ञान, जातीय विविधता, परंपरागत विधियों और लोक अनुभवों में निहित है। इसे मानकीकरण के मानकों में समायोजित करना चुनौतीपूर्ण और जटिल प्रक्रिया है, क्योंकि यह स्वाभाविक विविधता और सांस्कृतिक विशिष्टताओं को प्रभावित कर सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इस द्वैतता को संतुलित करने का प्रयास किया गया है। इसमें मूल्यांकन और पाठ्यक्रमों में स्थानीय ज्ञान, परंपरागत ज्ञान प्रणालियों एवं साम्प्रदायिक परिप्रेक्ष्यों को आवश्यक स्थान दिया गया है। यह नीति व्यापक भर्ती, नवाचार और सहजता के साथ-साथ समावेशन को भी प्रोत्साहित करती है। साथ ही, स्थानीय ज्ञान को संरक्षण और संवर्धन का अभिन्न भाग माना गया है, जिसके माध्यम से छात्रों में अपनी सांस्कृतिक धरोहर के प्रति जागरूकता और गर्व का संचार हो।

प्रस्ताव में यह भी उल्लेख किया गया है कि मानकीकरण को अपेक्षा के अनुरूप लचीलापन और बहुविध प्रयोगशाला के रूप में स्थानिक ज्ञान को आत्मसात करने हेतु अनुकूलित किया जाना चाहिए। इससे यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि शिक्षा प्रणाली भारीपन और अत्यधिक कठोरता से मुक्त होकर, विविधता में एकता का उदाहरण बने। इस दृष्टिकोण से, भारतीय ज्ञान परंपरा को केवल भौतिक कागजी संरचनाओं तक ही सीमित नहीं रखा जाएगा, बल्कि शिक्षण कार्य में वह जीवंतता एवं प्रासंगिकता उत्पन्न करेगा, जो विद्यार्थियों को अपने सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों से जोड़ सके।

इस प्रणाली का उद्देश्य शिक्षकों, विद्यार्थियों और शैक्षणिक संस्थानों को ऐसे वातावरण में विकसित करना है जिसमें परंपरागत ज्ञान केवल अध्ययन का विषय नहीं, बल्कि जीवन में व्यावहारिकता एवं जिम्मेदार भागीदारी का आधार बन जाए। इस प्रकार, मानकीकरण और स्थानीय ज्ञान के बीच संवाद और समरसता सुनिश्चित करते हुए, भारत की शिक्षा व्यवस्था में विविधता के समावेश की दिशा में सार्थक दिशा प्रशस्त होती है।

10. संसाधन, शिक्षक प्रशिक्षण और प्रभाव का आकलन

"संसाधन, शिक्षक प्रशिक्षण और प्रभाव का आकलन" के अंतर्गत भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुरूप संसाधनों का विकास और उनका सदा-सक्त उपयोग अत्यंत आवश्यक है। इस प्रक्रिया में पारंपरिक ज्ञान के स्रोत जैसे पुराने ग्रंथ, शास्त्र, और सांस्कृतिक संदर्भ उनके अध्ययन और व्यावहारिक उपयोग के लिए डिज़ाइन किए गए शैक्षिक संसाधनों का समावेश करता है। इन संसाधनों का सृजन शिक्षण सामग्री, डिजिटल प्लेटफार्म, और शिक्षण उपक्रमों के रूप में किया जाना चाहिए, जिससे छात्रों को भारतीय ज्ञान प्रणाली का सजीव अनुभव हो सके। शिक्षकों का प्रशिक्षण इन संसाधनों के प्रभावी उपयोग के लिए जरूरी है; उन्हें न केवल भारतीय परंपराओं का गहन ज्ञान प्राप्त करना चाहिए, बल्कि आधुनिक शिक्षण तकनीकों के साथ समन्वय भी स्थापित करना चाहिए। प्रशिक्षित शिक्षक भारतीय ज्ञान परंपरा को पाठ्यक्रम में उचित स्थान देते हुए, विद्यार्थियों के बीच भारतीय मूल्य, संस्कृति और परंपरा के प्रति सम्मान और जागरूकता विकसित कर सकते हैं। प्रभाव का आकलन करने के लिए विश्लेषणात्मक उपकरण और शिक्षण-मॉडल का प्रयोग आवश्यक है, जिनके माध्यम से यह सुनिश्चित किया जा सके कि इन संसाधनों का शिक्षण पर सकारात्मक फलप्रद परिणाम हो रहे हैं। प्रभावी आकलन के आधार पर संसाधनों में आवश्यक संशोधन और सुधार भी किए जा सकते हैं, जो भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण और प्रचार में सहायक सिद्ध होते हैं। इस तरह, संसाधनों का अनुकूलन, कुशल

शिक्षकों का प्रशिक्षण और प्रभाव का सतत आकलन भारतीय ज्ञान परंपरा का सम्यक संप्रेषण सुनिश्चित करने के साथ-साथ शैक्षिक संरचना में ताजा एवं समावेशी बदलाव लाने में सहायक है।

11. नीति कार्यान्वयन के चुनौतियाँ और आंतरिक मूल्यांकन

नीति कार्यान्वयन की प्रक्रिया में कई गहरे और जटिल चुनौतियाँ उपस्थित हैं, जिनका सम्यक आकलन आवश्यक है। सर्वप्रथम, संसाधनों की पारंपरिक एवं आधुनिक आवश्यकताओं के मध्य समन्वयन में कठिनाइयाँ आती हैं, जिससे भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रभावी समावेशन असंभव नहीं तो बहुत सीमित होकर रह जाता है। शिक्षक प्रशिक्षण में भी अपेक्षित बदलाव लाने में लंबी अवधि एवं संसाधनों की आवश्यकता होती है, जिससे व्यावहारिक प्रवर्तन बाधित हो सकता है। इसके अतिरिक्त, विभिन्न शिक्षण संस्थानों की संसाधनागत और शैक्षिक विविधता के कारण एकसमान कार्यान्वयन का स्तर तय करना चुनौतीपूर्ण है।

आंतरिक मूल्यांकन में भी अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। पारंपरिक मानकों के स्थान पर समावेशी, बहु-आयामी एवं सांस्कृतिक संवेदनशील आकलन विधियों का विकास और क्रियान्वयन आवश्यक है, जो समय एवं प्रयास की मांग करता है। इसके अतिरिक्त, स्थानीय एवं पारंपरिक ज्ञान के साथ मुख्यधारा की शिक्षा के बीच समरसता स्थापित करने की प्रक्रिया में सामाजिक और शैक्षिक बाधाएँ मौजूद हैं। अक्सर, शिक्षा प्रणाली के मानकीकरण एवं विदेशी मानकों की ओर झुकाव स्थानीय एवं उपयुक्त ज्ञान की विधियों को अनुशासन में लाने में बाधा बनता है। इन चुनौतियों के बावजूद, इनका समाधान सतत प्रयास, समर्पित संसाधनों एवं शिक्षकों, शिक्षण संस्थानों की जागरूकता एवं प्रशिक्षण पर बल देकर ही संभव है। आंतरिक मूल्यांकन के माध्यम से भी इन प्रयासों की प्रगति एवं प्रभाव का नियमित निगरानी एवं मूल्यांकन सुनिश्चित किया जाना चाहिए, ताकि आवश्यकतानुसार सुधार एवं समायोजन किए जाएं। अंततः, इन चुनौतियों का सफल समाधान भारतीय ज्ञान परंपरा के शिक्षण में उसका समावेश एवं प्रभावी कार्यान्वयन के लिए अनिवार्य है, जो दीर्घकालिक सामाजिक एवं शैक्षिक उत्थान का आधार बनेगा।

12. परिणाम और सामाजिक-शैक्षिक प्रभाव: पूर्वानुमानित प्रभाव

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ एकीकरण के परिणामस्वरूप सामाजिक-शैक्षिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन की संभावना है। यह एकीकरण शैक्षिक प्रणाली में परंपरागत भारतीय मूल्य्यों और ज्ञानके प्रतीकात्मक महत्व को पुनः स्थापित करता है, जिससे छात्र संवाद, समावेशिता और सांस्कृतिक पहचान की धारणा को मजबूत बनाते हैं। परीक्षाओं और मूल्यांकन तंत्र में भारतीय शिक्षण-पद्धतियों का समावेशन विद्यार्थियों के मौलिक सोच, नैतिक मूल्यों और संज्ञानात्मक क्षमताओं का विस्तार करेगा, जिससे मानसिक और व्यक्तित्वविकास में सुधार संभव है। साथ ही, अंग्रेजी एवं पश्चिमी शिक्षण पद्धतियों के साथ संतुलित भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश, ग्रामीण और संदर्भगत शिक्षा में समावेशन को प्रोत्साहित करेगा, जिसके कारण शैक्षिक अवसर में समानता आएगी और शैक्षणिक परिवर्तन में तेजी से सुधार होंगे। इससे विद्यार्थियों का सांस्कृतिक गर्व और सामाजिक अभिवृत्ति मजबूत होगी, जो दीर्घकालिक सामाजिक समरसता एवं एकता के निर्माण में सहायक होगी। प्रत्याशित तौर पर, इस समावेशन से शिक्षा का लोकतंत्रीकरण सुनिश्चित होगा, जिसमें स्थानीय ज्ञान और परंपराएँ सम्मानित और जीवंत बनेंगी। इससे सामाजिक गहनता और जागरूकता का विकास होगा, साथ ही पारंपरिक और आधुनिक ज्ञान के मिलन से नवाचार एवं रचनात्मकता का आधार मजबूत होगा। दीर्घकालिक प्रभावों के रूप में, यह नीति भारतीय शिक्षा प्रणाली को अधिक समावेशी, स्थायी और उदार स्वरूप प्रदान करेगी, जिससे सामाजिक दलितों, पिछड़े वर्गों एवं ग्रामीण समुदायों का शैक्षिक अर्जन एवं सामाजिक समावेशन संभव होगा।

अंततः, भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ एकीकरण से शिक्षा केवल जानकारी का संचार नहीं, बल्कि जीवन मूल्यों, सांस्कृतिक संवेदनाओं और सामाजिक दायित्व की जागरूकता का माध्यम बनेगा, जो समाज की समग्र उन्नति एवं विश्व में भारत की पहचान को दृढ़ करेगा।

13. निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश अत्यंत महत्वपूर्ण और समकालीन शिक्षा प्रणाली की धारणा का आवश्यक हिस्सा है। इस नीति ने परंपरागत भारतीय विद्याओं, दर्शन और शिक्षण पद्धतियों को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने का संकल्प व्यक्त किया है। यह न केवल शैक्षिक पाठ्यक्रमों में भारतीय ज्ञान के मूल तत्वों को शामिल करने का प्रयास है, बल्कि इसकी मूल भावना विद्यार्थियों में स्वदेशी संस्कृति, परंपरा और मूल्य की समझ जागरूकता भी विकसित करना है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो भारतीय शिक्षा क्रम विविध विद्याओं जैसे वाग्देवी, वेद, उपनिषद, योग, आयुर्वेद आदि के साथ परंपरागत ज्ञान का समायोजन रहा है। वर्तमान में, इसकी पुनः स्थापना भारतीय ज्ञान के वैज्ञानिक आधार और सांस्कृतिक विशिष्टता को मान्य करने की दिशा में एक सक्रिय कदम है, जो वैश्वीकरण के प्रभावों के बीच अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने में सहायक है। यह नीति भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक शिक्षण विधियों, पाठ्यक्रम, शिक्षणकर्मियों एवं मूल्यांकन प्रणालियों में समावेशित कर शिक्षार्थियों को सतत् जागरूकता, समग्र विकास और नवाचार के लिए प्रेरित कर रही है। परिणामस्वरूप, यह शिक्षा प्रणाली न केवल वैज्ञानिक दृष्टिकोण और वैश्विक मानकों के अनुरूप है, बल्कि उसकी जड़ों में भारतीय संस्कृति एवं परंपरा का मूलाधार भी सुरक्षित है। इससे भावात्मक, नैतिक और दार्शनिक स्तर पर संतुलित स्वराज्य एवं स्वायत्तता का संचार होता है, जो दीर्घकालीन सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए आधारशिला तैयार कर रहा है। इस समागम का उद्देश्य केवल ज्ञान का संकलन नहीं, बल्कि इसकी जीवंतता, प्रासंगिकता और सामाजिक संदर्भों के साथ निरंतर संवाद भी सुनिश्चित करना है। यह अंततः इस बात का प्रतीक है कि भारतीय ज्ञान परंपरा का आधुनिक शिक्षा सिस्टम में सम्मिश्रण न्यायसंगत, प्रभावी और समावेशी विकास का महत्वपूर्ण माध्यम बन रहा है, जो देश की सांस्कृतिक अवधान्यता एवं नवाचार की दिशा में एक स्वस्थ गतिशीलता प्रदान कर रहा है।

14.सन्दर्भ ग्रंथ सूचि:

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
- डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' (2021): *राष्ट्रीय शिक्षा नीति का शैक्षिक परिदृश्य पर प्रभाव*, प्रकाशक – केंद्रीय शिक्षा प्रकाशन, नई दिल्ली।
- प्रो. वेद प्रकाश (2020): *भारतीय उच्च शिक्षा में परिवर्तन के आयाम*, भारतीय विश्वविद्यालय संघ (AIU), नई दिल्ली।
- डॉ. सुरेश चंद्र (2019): *समावेशी शिक्षा: सिद्धांत और व्यवहार*, प्रकाशन – राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
- डॉ. अर्चना सिंह (2022): *उच्च शिक्षा में अनुसंधान और नवाचार*, प्रकाशक – शिक्षा बुक हाउस, वाराणसी।
- Aithal, S., & Aithal, S. (2019). *Analysis of higher education in Indian National Education Policy Proposal 2019 and its implementation challenges.*
- Bajaj, D. (2014). *Quality before quantity: The challenges and shortcomings of primary education in India.*
- Bajpai, N., Biberman, J., & Sharma, A. (2019). *Information and communications technology in the education sector in India.*

- Fatima Shirly Anitha, G., & Narasimhan, U. (2021). *Seeing the National Education Policy 2020 through the lens of early child development.*
- Kumar Jena, P. (2021). *Indian education in pandemic COVID-19.*
- Kumar Nag, R. (2022). *Is India ready to accept an EdTech-intensive system in post pandemic times? A strategic analysis of India's "readiness" in terms of basic infrastructural support.*
- Krishnapriya, T. K., & Rani, P. (2022). *The parrot's training in the pandemic: Fallacies in India's educational response to COVID-19.*
- Batra, P. (2021). *Re-imagining curriculum in India: Charting a path beyond the pandemic.*
- Singh, M., Oyeniyi Adebayo, S., Saini, M., & Singh, J. (2021). *Indian government e-learning initiatives in response to COVID-19 crisis: A case study on online learning in Indian higher education system.*
- *on online learning in Indian higher education system*

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-02, Issue-02, Dec.- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-Dec-2024/33

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

सालिम अली

For publication of Book Review title

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा का भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ एकीकरण

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-02, Month December, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com